कक्षा 12 · संस्कृतम् ऐच्छिकम् (022) · शाश्वती द्वितीयो भागः

तृतीयः पाठः
बालकौतुकम्

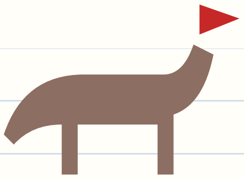

आश्वमेधिकोऽयमश्वः

महाकविः भवभूतिः · उत्तररामचरितम्, चतुर्थः अङ्कः · नाट्यांशः

पाठ-परिचयः

अयं नाट्यांशः करुणरसस्य अनुपमचित्रकारस्य महाकवेः **भवभूतेः उत्तररामचरितम्** इति नाटकस्य **चतुर्थाङ्कात्** सङ्कलितः। भवभूतिः (8वीं शती, कान्यकुब्जेश्वर यशोवर्मा के समकालीन) के तीन नाटक: मालतीमाधवम्, महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्; '**उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते**'।

★ **परीक्षा-सुझाव: हिंदी में कथा:** निर्वासित सीता के जुड़वाँ पुत्र **लव-कुश** का पालन महर्षि **वाल्मीकि** के आश्रम में हुआ। अतिथि बनकर आए **जनक, कौसल्या, अरुन्धती** खेलते बालकों में एक बालक (लव) में राम-सीता की छवि देखते हैं, उसे बुलाकर गोद में बिठाते हैं, वात्सल्य बरसाते हैं। तभी **चन्द्रकेतु** द्वारा रक्षित राम का **अश्वमेधीय घोड़ा** आश्रम में आता है; बालक (बटु) उत्सुक होकर लव को घोड़ा दिखाने खींच ले जाते हैं। लव पहचान लेता है कि यह **आश्वमेधिक** अश्व है। 'सप्तलोकैकवीर, रावणकुल-शत्रु (राम) की वीरघोषणा' सुनकर लव क्रोधित होता है: 'तो क्या पृथ्वी क्षत्रियों से रहित है?' और बटुओं से घोड़े को पकड़कर आश्रम के मृगों में मिला देने को कहता है। राजपुरुष धमकाते हैं, बटु भागने को कहते हैं, पर लव धनुष चढ़ा लेता है।

बोर्ड में इस पाठ से (2024–2026) ★★★ सबसे अधिक

वर्ष	प्रश्न	अंक
2026	**Q11 नाट्यांश** (कौसल्या 'राजर्षे! किं न पश्यसि?' से बटु '...प्रत्यक्षीकृतः' तक); Q5(ii) कथयितव्यम् = कथ् + तव्यत्; Q6(घ) 'स्मरसि **वा** तातम्'	5+2
2025	**Q11 नाट्यांश** (लव 'दृष्टमवगतं च...' से बटु '...पर्यटति?' तक); Q4(घ) युष्माभिः + अपि; Q5(ii) कथयितव्यम्; Q5(iv) अक्षत्रिया = अक्षत्रिय + टाप्; Q6(घ) '**यदि** च विप्रत्ययः'; Q18 'मनो मे संमोहस्थिरमपि...' → शिखरिणी; Q19 'यदि नो सन्ति...', 'मुखचन्द्रेणापि...' (रूपक)	5+7
2024	**Q11 नाट्यांश** (लव का प्रवेश, 'एष वो लवस्य...' से 'मुखपुण्डरीकम्' तक); Q4(क) पताका + इयम्; Q4(ग) कः + अपि; Q5(iii) बालत्वम्; Q6(ग) 'जात! **चिरम्** जीव'; Q7(ग) रामभद्रम्; Q8(iii) मुखपुण्डरीकम्; Q12(ख) अस्माभिः → कैः; Q18 'महिम्नामेतस्मिन्...' → शिखरिणी; Q19 'पुनरपि शिशुर्भूतो...'	5+9

SAMPLE · notesbazar.in

3.1 मूलपाठः, हिंदी अनुवादः ★★★

(नेपथ्ये कलकलः। सर्वे आकर्णयन्ति) **जनकः**: अये, शिष्टानध्याय इत्यस्खलितं खेलतां बटूनां कोलाहलः।

> **अनुवाद:** (परदे के पीछे शोर। सब सुनते हैं) जनक: अरे, बड़ों (शिष्टजनों) के आगमन के कारण अवकाश (अनध्याय) है, इसलिए बेरोकटोक खेलते हुए ब्रह्मचारी बालकों (बटुओं) का यह कोलाहल है।

कौसल्या: सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति। अहो, एतेषां मध्ये क एष रामभद्रस्य मुग्धललितैरङ्गैर्दारकोऽस्माकं लोचने शीतलयति?

> **अनुवाद:** बचपन में सुख सहज ही मिल जाता है। अहो, इनके बीच यह कौन बालक है, जो रामभद्र जैसे सुन्दर-कोमल अंगों से हमारी आँखों को शीतल (तृप्त) कर रहा है? **2024 Q5(iii):** बाल + त्व = **बालत्वम्**।

अरुन्धती: कुवलयदलस्निग्धश्यामः शिखण्डकमण्डनो वटुपरिषदं पुण्यश्रीकः श्रियैव सभाजयन्। पुनरपि शिशुर्भूतो वत्सः स मे रघुनन्दनो झटिति कुरुते दृष्टः कोऽयं दृशोरमृताञ्जनम्॥1॥ (हरिणी)

> **अन्वयः:** कुवलयदलस्निग्धश्यामः शिखण्डकमण्डनः पुण्यश्रीकः श्रिया एव वटुपरिषदं सभाजयन् (अयं) कः? दृष्टः (सन्) झटिति दृशोः अमृताञ्जनं कुरुते, (मन्ये) सः मे वत्सः रघुनन्दनः पुनः अपि शिशुः भूतः।
>
> **अनुवाद:** नील कमल की पंखुड़ी जैसा चिकना-श्याम, काकपक्ष (घुँघराले बालों) से सुशोभित, अलौकिक शोभा वाला, अपनी शोभा से ही बटु-मण्डली को सुशोभित करता यह कौन है, जो देखते ही आँखों में अमृत का अंजन-सा लगा देता है? मानो मेरा वही वत्स रघुनन्दन (राम) फिर से बालक बन गया हो। **अलङ्कारः:** उपमा (कुवलयदल-स्निग्धश्यामः), उत्प्रेक्षा (पुनरपि शिशुर्भूतो... 2024 Q19)।

जनकः: (चिरं निर्वर्ण्य) भोः किमप्येतत्। महिम्नामेतस्मिन् विनयशिशिरो मौग्ध्यमसृणो विदग्धैर्निर्ग्राह्यो न पुनरविदग्धैरतिशयः। मनो मे संमोहस्थिरमपि हरत्येष बलवान् अयोधातुं यद्वत्परिलघुरयस्कान्तशकलः॥2॥ (शिखरिणी)

> **अन्वयः:** एतस्मिन् महिम्नाम् अतिशयः विनयशिशिरः मौग्ध्यमसृणः विदग्धैः निर्ग्राह्यः, न पुनः अविदग्धैः। एषः बलवान् (अतिशयः) संमोहस्थिरम् अपि मे मनः हरति, यद्वत् परिलघुः अयस्कान्तशकलः अयोधातुम् (हरति)।
>
> **अनुवाद:** (देर तक देखकर) अरे, यह कुछ (विलक्षण) है। इस बालक में महिमाओं की अधिकता है, जो विनय से शीतल और मधुर स्वभाव (भोलेपन) से कोमल है; उसे विवेकी जन ही पहचान सकते हैं, अविवेकी नहीं। यह प्रबल (महिमा) शोक के आघात से जड़ हुए मेरे मन को भी वैसे ही खींच रही है, जैसे चुम्बक का छोटा-सा टुकड़ा लोहे को खींच लेता है। **अलङ्कारः:** उपमा/दृष्टान्त (अयस्कान्तशकलः)। **छन्दः: शिखरिणी** (2024 Q18, 2025 Q18)।

लवः: (प्रविश्य, स्वगतम्) अविज्ञातवयःक्रमौचित्यात् पूज्यानपि सतः कथमभिवादयिष्ये? (विचिन्त्य) अयं पुनरविरुद्धप्रकार इति वृद्धेभ्यः श्रूयते। (सविनयमुपसृत्य) एष वो लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः।

> **अनुवाद:** (प्रवेश करके, मन में) आयु के छोटे-बड़े क्रम का ज्ञान न होने से, पूज्य होते हुए भी इनका अभिवादन किस प्रकार करूँ? (सोचकर) यह (सामूहिक प्रणाम) प्रकार उचित (अविरुद्ध) है, ऐसा बड़ों से सुना है। (विनयपूर्वक पास जाकर) यह आप सबको लव का सिर झुकाकर क्रमशः प्रणाम है।

अरुन्धतीजनकौ: कल्याणिन्! आयुष्मान् भूयाः। **कौसल्या**: जात! चिरं जीव।

> **अनुवाद:** अरुन्धती-जनक: हे कल्याणवान्! दीर्घायु हो। कौसल्या: पुत्र! चिरकाल तक जियो। (2024 Q6: जात! **चिरम्** जीव)

अरुन्धती: एहि वत्स! (लवमुत्सङ्गे गृहीत्वा आत्मगतम्) दिष्ट्या न केवलमुत्सङ्गश्चिरान्मनोरथोऽपि मे पूरितः।

> **अनुवाद:** आओ वत्स! (लव को गोद में लेकर मन में) सौभाग्य से न केवल मेरी गोद, बल्कि बहुत समय से चला आ रहा मेरा मनोरथ भी पूरा हो गया।

कौसल्या: जात! इतोऽपि तावदेहि। (उत्सङ्गे गृहीत्वा) अहो, न केवलं मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन, कलहंसघोषघर्घरानुनादिना स्वरेण च रामभद्रमनुसरति। जात! पश्यामि ते मुखपुण्डरीकम्। (चिबुकमुन्नमय्य, निरूप्य, सवाष्पाकूतम्) राजर्षे! किं न पश्यसि? निपुणं निरूप्यमाणो वत्साया मे वध्वा मुखचन्द्रेणापि संवदत्येव।

> **अनुवाद:** पुत्र! इधर भी आओ। (गोद में लेकर) अहो, यह केवल बलिष्ठ और तेजस्वी शरीर-गठन से ही नहीं, कलहंस के घोष के समान गम्भीर-मधुर स्वर से भी रामभद्र का अनुसरण करता है (राम जैसा है)। पुत्र! तुम्हारा मुख-कमल देखूँ। (ठोड़ी ऊपर उठाकर, ध्यान से देखकर, आँसू भरे भाव से) राजर्षि (जनक)! क्या आप नहीं देख रहे? ध्यान से देखने पर यह मेरी प्यारी बहू (सीता) के मुखचन्द्र से भी मेल खाता है।

> **अलङ्काराः: मुखपुण्डरीकम्** (मुखम् एव पुण्डरीकम्: रूपक; 2024 Q8(iii)), **मुखचन्द्रेण** (रूपक; 2025 Q19(ii))।

जनकः: पश्यामि, सखि! पश्यामि। (निरूप्य) वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावस्मिन्नभिव्यज्यते, संवृत्तिः प्रतिबिम्बितेव निखिला सैवाकृतिः सा द्युतिः। सा वाणी विनयः स एव सहजः पुण्यानुभावोऽप्यसौ हा हा देवि किमुत्पथैर्मम मनः पारिप्लवं धावति॥3॥ (शार्दूलविक्रीडितम्)

> **अनुवाद:** देख रहा हूँ, सखी! देख रहा हूँ। (ध्यान से देखकर) इस बालक में पुत्री (सीता) और रघुश्रेष्ठ (राम) दोनों की पूरी आकृति मानो प्रतिबिम्बित-सी अभिव्यक्त हो रही है: वही आकृति, वही कान्ति, वही वाणी, वही स्वाभाविक विनय, और वही पवित्र प्रभाव। हा देवि (सीते)! मेरा चंचल मन उल्टे मार्गों (कल्पनाओं) पर क्यों दौड़ रहा है?
> **2026 Q11(आ)(ii):** लवं दृष्ट्वा जनकस्य मनः उत्पथैः **पारिप्लवं धावति**।

कौसल्या: जात! अस्ति ते माता? स्मरसि वा तातम्? **लवः**: नहि। **कौसल्या**: ततः कस्य त्वम्? **लवः**: भगवतः सुगृहीतनामधेयस्य वाल्मीकेः। **कौसल्या**: अयि जात! कथयितव्यं कथय। **लवः**: एतावदेव जानामि।

> **अनुवाद:** कौसल्या: पुत्र! क्या तुम्हारी माता है? क्या पिता को याद करते हो? लव: नहीं। कौसल्या: तो तुम किसके हो? लव: पूज्य, पवित्र-नाम वाले भगवान् वाल्मीकि का। कौसल्या: अरे पुत्र! जो बताने योग्य है, बताओ। लव: बस इतना ही जानता हूँ।
> **2026 Q6(घ):** स्मरसि **वा** तातम्; **Q5(ii):** कथयितव्यम् = कथ् + तव्यत्।

(प्रविश्य सम्भ्रान्ताः) **बटवः**: कुमार! कुमार! अश्वोऽश्व इति कोऽपि भूतविशेषो जनपदेष्वनुश्रूयते, सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः।

> **अनुवाद:** (घबराए हुए प्रवेश करके) बटु: कुमार! कुमार! 'अश्व-अश्व' नाम का कोई प्राणी-विशेष जनपदों (नगरों) में सुना जाता है, वही अब हमने स्वयं प्रत्यक्ष देख लिया है। **2024 Q4(ग):** कोऽपि = कः + अपि; **Q12(ख):** अस्माभिः → कैः।

लवः: 'अश्वोऽश्व' इति नाम पशुसमाम्नाये सांग्रामिके च पठ्यते, तद् ब्रूत: कीदृशः? **बटवः**: अये, श्रूयताम्: पश्चात्पुच्छं वहति विपुलं तच्च धूनोत्यजस्रं दीर्घग्रीवः स भवति, खुरास्तस्य चत्वार एव। शष्पाण्यत्ति, प्रकिरति शकृत्पिण्डकानाम्रमात्रान् किं व्याख्यानैर्व्रजति स पुनर्दूरमेह्येहि यामः॥4॥ (मन्दाक्रान्ता)

> **अनुवाद:** लव: 'अश्व' नाम पशुशास्त्र और युद्धशास्त्र में पढ़ा जाता है; तो बताओ, वह कैसा है? बटु: अरे, सुनिए: वह पीछे बड़ी पूँछ धारण करता है और उसे लगातार हिलाता है; उसकी गर्दन लम्बी होती है; उसके खुर चार ही हैं; वह घास खाता है; आम के बराबर लीद के गोले बिखेरता है। व्याख्या से क्या लाभ, वह फिर दूर चला जाएगा; आओ, आओ, चलें। (हास्य रस)

(इत्यजिने हस्तयोश्चाकर्षन्ति) **लवः**: (सकौतुकोपरोधविनयम्) आर्याः! पश्यत। एभिर्नीतोऽस्मि। (इति त्वरितं परिक्रामति) **अरुन्धतीजनकौ**: महत्कौतुकं वत्सस्य। **कौसल्या**: अरण्यगर्भरूपालापैर्यूयं तोषिता वयं च। भगवति! जानामि तं पश्यन्ती वञ्चितेव। तस्मादितोऽन्यतो भूत्वा प्रेक्षामहे तावत् पलायमानं दीर्घायुषम्। **अरुन्धती**: अतिजवेन दूरमतिक्रान्तः स चपलः कथं दृश्यते?

> **अनुवाद:** (मृगचर्म और हाथ पकड़कर खींचते हैं) लव: (कौतूहल, आग्रह और विनय के साथ) आर्यो! देखिए, ये मुझे ले जा रहे हैं। (जल्दी से घूमता है) अरुन्धती-जनक: बालक का कौतूहल बड़ा है। कौसल्या: वनवासी बालकों के रूप और बातों से आप और हम सन्तुष्ट हुए। भगवति! उसे देखते हुए भी मैं मानो ठगी-सी हूँ। इसलिए यहाँ से हटकर दूसरी ओर से उस दौड़ते हुए दीर्घायु बालक को देखें। अरुन्धती: अत्यन्त वेग से दूर निकल गया वह चंचल कैसे दिखेगा?

(प्रविश्य) **बटवः**: पश्यतु कुमारस्तावदाश्चर्यम्। **लवः**: दृष्टमवगतं च। नूनमाश्वमेधिकोऽयमश्वः। **बटवः**: कथं ज्ञायते? **लवः**: ननु मूर्खाः! पठितमेव हि युष्माभिरपि तत्काण्डम्। किं न पश्यथ? प्रत्येकं शतसंख्याः कवचिनो दण्डिनो निषङ्गिणश्च रक्षितारः। यदि च विप्रत्ययस्तत्पृच्छत। **बटवः**: भो भोः! किंप्रयोजनोऽयमश्वः परिवृतः पर्यटति?

> **अनुवाद:** बटु: कुमार यह आश्चर्य देखें। लव: देख लिया और समझ भी लिया। निश्चय ही यह अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा है। बटु: कैसे जाना? लव: अरे मूर्खो! तुमने भी तो वह (अश्वमेध) काण्ड पढ़ा ही है। क्या नहीं देखते? (इसके) रक्षक कवचधारी, दण्डधारी और तरकसधारी हैं, (प्रत्येक दिशा में) सौ-सौ की संख्या में। यदि सन्देह हो तो पूछ लो। बटु: अरे-अरे! यह घोड़ा (सैनिकों से) घिरा हुआ किस प्रयोजन से घूम रहा है?
> **2025 Q11:** यही नाट्यांश (पृष्ठ 7); **Q4(घ):** युष्माभिरपि = युष्माभिः + अपि; **Q6(घ): यदि** च विप्रत्ययः।

लवः: (सस्पृहमात्मगतम्) 'अश्वमेध' इति नाम विश्वविजयिनां क्षत्रियाणामूर्जस्वलः सर्वक्षत्रपरिभावी महान् उत्कर्षनिकषः। (नेपथ्ये) योऽयमश्वः पताकेयमथवा वीरघोषणा। सप्तलोकैकवीरस्य दशकण्ठकुलद्विषः॥5॥ (अनुष्टुप्)

> **अनुवाद:** लव: (इच्छा से, मन में) 'अश्वमेध' नामक यज्ञ विश्वविजयी क्षत्रियों की शक्तिशाली, समस्त (शत्रु) क्षत्रियों को पराजित करने वाली, उत्कर्ष की महान् कसौटी है। (नेपथ्य में) यह जो घोड़ा है, वह सातों लोकों के एकमात्र वीर, रावण के कुल के शत्रु (राम) की पताका है, अथवा उनकी वीरता की घोषणा है। **2024 Q4(क):** पताकेयम् = पताका + इयम्।

लवः: (सगर्वम्) अहो! संदीपनान्यक्षराणि। **बटवः**: किमुच्यते? प्राज्ञः खलु कुमारः। **लवः**: भो भोः! तत्किमक्षत्रिया पृथिवी? यदेवमुद्घोष्यते? (नेपथ्ये) रे, रे, महाराजं प्रति कः क्षत्रियः? **लवः**: धिग् जाल्मान्। यदि नो सन्ति सन्त्येव केयमद्य विभीषिका। किमुक्तैरेभिरधुना तां पताकां हरामि वः॥6॥

> **अनुवाद:** लव: (गर्व से) अहो! ये शब्द (क्रोध) भड़काने वाले हैं। बटु: क्या कहते हो? कुमार निश्चय ही बुद्धिमान् हैं। लव: अरे-अरे! तो क्या पृथ्वी क्षत्रियों से रहित है, जो ऐसी घोषणा की जा रही है? (नेपथ्य में) अरे, महाराज (राम) के सामने कौन क्षत्रिय है? लव: धिक्कार है नीचों को! यदि (तुम्हारे अनुसार) क्षत्रिय नहीं हैं, तो (मैं कहता हूँ) हैं ही; आज यह डराना कैसा? इन बातों से अब क्या, मैं तुम्हारी उस पताका (घोड़े) को हर लेता हूँ।
> **2025 Q5(iv):** अक्षत्रिया = अक्षत्रिय + टाप्; **2024 Q6(क):** महाराजं **प्रति**; **2025 Q19(i):** 'यदि नो सन्ति सन्त्येव' (अनुप्रास/यमक-सदृश)।

हे बटवः! परिवृत्य लोष्ठैरभिघ्नन्त उपनयतैनमश्वम्। एष रोहितानां मध्येचरो भवतु। (प्रविश्य सक्रोधः) **पुरुषः**: धिक् चपल! किमुक्तवानसि? तीक्ष्णतरा ह्यायुधश्रेणयः शिशोरपि दृप्तां वाचं न सहन्ते। राजपुत्रश्चन्द्रकेतुर्दुर्दान्तः, सोऽप्यपूर्वारण्यदर्शनाक्षिप्तहृदयो न यावदायाति, तावत् त्वरितमनेन तरुगहनेनापसर्पत। **बटवः**: कुमार! कृतं कृतमश्वेन। तर्जयन्ति विस्फारितशरासनाः कुमारमायुधीयश्रेणयः। दूरे चाश्रमपदम्। इतस्तदेहि। हरिणप्लुतैः पलायामहे। **लवः**: किं नाम विस्फुरन्ति शस्त्राणि? (इति धनुरारोपयति)

> **अनुवाद:** हे बटुओ! (घोड़े को) घेरकर ढेलों से मारते हुए ले आओ; यह (आश्रम के) मृगों के बीच चरने वाला हो जाए। (क्रोध से प्रवेश करके) राजपुरुष: धिक्कार है चंचल! क्या कह दिया? अत्यन्त तीक्ष्ण शस्त्रधारी सेनाएँ बालक की भी घमंड भरी वाणी सहन नहीं करतीं। राजकुमार चन्द्रकेतु दुर्दम्य है; वह अपूर्व वन देखने में मग्न मन वाला जब तक नहीं आता, तब तक इस घने वृक्ष-मार्ग से जल्दी भाग जाओ। बटु: कुमार! घोड़े से बस करो। धनुष ताने हुए शस्त्रधारी सैनिक कुमार को डाँट रहे हैं, और आश्रम दूर है। इधर आइए, हिरणों की तरह छलाँगें लगाते भाग चलें। लव: क्या शस्त्र चमक रहे हैं? (धनुष चढ़ाता है)

NCERT अभ्यासः, पूर्णतः हलः

1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्।

> **उत्तर:** (क) 'उत्तररामचरितम्' इति नाटकस्य रचयिता **महाकविः भवभूतिः**। (ख) नेपथ्ये कोलाहलं श्रुत्वा जनकः कथयति: '**अये, शिष्टानध्याय इत्यस्खलितं खेलतां बटूनां कोलाहलः**।' (ग) लवः **मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन कलहंसघोषघर्घरानुनादिना स्वरेण च** रामभद्रम् अनुसरति। (घ) बटवः अश्वं वर्णयन्ति: **सः पश्चात् विपुलं पुच्छं वहति, तच्च अजस्रं धूनोति; दीर्घग्रीवः भवति; तस्य चत्वारः खुराः; शष्पाणि अत्ति; आम्रमात्रान् शकृत्पिण्डकान् प्रकिरति।** (ङ) अश्वस्य रक्षितारः प्रत्येकं शतसंख्याः कवचिनः दण्डिनः निषङ्गिणः च सन्ति, अश्वमेधकाण्डं च पठितम्; अतः **लवः जानाति यत् अयम् आश्वमेधिकः अश्वः**। (च) राजपुरुषस्य तीक्ष्णतराः आयुधश्रेणयः **शिशोः अपि दृप्तां वाचं** न सहन्ते।

2. प्रश्ननिर्माणम्।

> **उत्तर:** (क) क्षत्रियाणाम् → केषाम् (ख) लोष्ठैः → कैः (ग) रामभद्रस्य → कस्य (घ) उत्पथैः → कैः (ङ) अतिजवेन → केन (च) विस्फारितशरासनाः → कीदृशाः (छ) मुखचन्द्रेण → केन

3. सप्रसङ्ग-व्याख्या (हिन्दी, संक्षेप)

> **उत्तर: (क) सर्वक्षत्रपरिभावी महान् उत्कर्षनिकषः:** घोड़े को देखकर लव मन में सोचता है कि अश्वमेध यज्ञ विश्वविजयी क्षत्रियों की शक्ति, सब शत्रु-क्षत्रियों को पराजित करने और उत्कर्ष (श्रेष्ठता) की महान् कसौटी है: लव का क्षात्र-तेज और स्पृहा।
> **(ख) किं व्याख्यानैर्व्रजति स पुनर्दूरमेह्येहि यामः:** घोड़े का भोला वर्णन करने के बाद बटु कहते हैं कि व्याख्या से

क्या, वह दूर चला जाएगा, जल्दी चलो: बाल-सुलभ उत्सुकता और हास्य।
(ग) सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति: खेलते बटुओं का कोलाहल सुनकर कौसल्या कहती हैं कि बचपन में सुख सहज ही सुलभ होता है: चिन्ता-रहित बाल्यावस्था।
(घ) झटिति कुरुते दृष्टः कोऽयं दृशोरमृताञ्जनम्: लव को देखकर अरुन्धती कहती हैं कि यह कौन है जो देखते ही आँखों में अमृत का अंजन लगा देता है: राम-जैसी शोभा से वात्सल्य-भाव।

4. कः कं प्रति कथयति?

उत्तर: (क) कौसल्या → लवम् (ख) अरुन्धती → (आत्मगतम्/स्वयम्) (ग) जनकः → कौसल्याम् (घ) बटवः → लवम् (ङ) कौसल्या → अरुन्धतीम् (च) पुरुषः (राजपुरुषः) → लवम्

5. रिक्तस्थानपूर्तिः

उत्तर: (क) क एष (**अस्माकं मध्ये**) … लोचने **शीतलयति** (ख) एष **बलवान्** (अतिशयः) मे … मनः हरति (ग) **जात**! इतोऽपि तावदेहि (घ) 'अश्वोऽश्व' **इति** नाम… (ङ) युष्माभिरपि तत्काण्डं **पठितम्** एव हि (च) एष वो लवस्य **शिरसा** प्रणामपर्यायः

6. समस्तपदानि, समासनाम

उत्तर: (क) विनयशिशिरः: तृतीया तत्पुरुषः (ख) अयस्कान्तशकलः: षष्ठी तत्पुरुषः (ग) दीर्घग्रीवः: बहुव्रीहिः (घ) मुखपुण्डरीकम्: कर्मधारयः (रूपक) (ङ) पुण्यानुभावः: कर्मधारयः (च) अस्खलितम्: नञ् तत्पुरुषः

7. पारिभाषिकशब्दाः

उत्तर: नेपथ्ये → पर्दे के पीछे; आत्मगतम् → अपने मन में; प्रकाशम् → प्रकट रूप में; निरूप्य → देखकर; उत्सङ्गे गृहीत्वा → गोद में बिठाकर; प्रविश्य → प्रवेश करके; सगर्वम् → गर्व के साथ; स्वगतम् → अपने मन में।

8. लवस्य चारित्रिकवैशिष्ट्यम् (हिन्दी)

उत्तर: (1) **विनयी, शिष्टाचारी**: आयु-क्रम न जानते हुए सबको सामूहिक प्रणाम; (2) **तेजस्वी, सुन्दर**: राम-सीता की छवि, कलहंस-सा स्वर; (3) **विद्वान्**: पशुशास्त्र, युद्धशास्त्र, अश्वमेधकाण्ड का ज्ञान, आश्वमेधिक अश्व तुरन्त पहचानना; (4) **स्वाभिमानी, क्षात्र-तेज से युक्त**: 'क्या पृथ्वी क्षत्रियों से रहित है?'; (5) **निर्भीक, साहसी**: सैनिकों की धमकी पर धनुष चढ़ाना; (6) **गुरुभक्त**: स्वयं को वाल्मीकि का बताना।

9. छन्दः

उत्तर: (क) महिम्नामेतस्मिन्… → **शिखरिणी** (ख) वत्सायाश्च रघूद्वहस्य… → **शार्दूलविक्रीडितम्** (ग) पश्चात्पुच्छं वहति… → **मन्दाक्रान्ता**

10. उत्प्रेक्षा, उपमा उदाहरणम्

उत्तर: उत्प्रेक्षा: 'संवृत्तिः प्रतिबिम्बितेव निखिला'; 'पुनरपि शिशुर्भूतो वत्सः स मे रघुनन्दनः'। **उपमा:** 'अयोधातुं यद्वत्परिलघुरयस्कान्तशकलः'; 'कुवलयदलस्निग्धश्यामः'।

SAMPLE · notesbazar.in

CBSE बोर्ड नाट्यांशाः, हल सहित (5 अंक)

CBSE 2026 · 49 Q11 नाट्यांशः: कौसल्या 'राजर्षे! किं न पश्यसि? निपुणं निरूप्यमाणो वत्साया मे वध्वा मुखचन्द्रेणापि संवदत्येव।' … जनकः 'पश्यामि, सखि!…' … कौसल्या 'जात! अस्ति ते माता? स्मरसि वा तातम्?' … बटवः '…सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः।' (पृष्ठ 3) [5]

उत्तर: (अ) एकपदेन (2 × ½): (i) लवस्य मुखं कया संवदति? **वध्वा** (वत्सया) (ii) बटुभिः कः प्रत्यक्षीकृतः? **अश्वः** (iii) 'ततः कस्य त्वम्?' इति का पृच्छति? **कौसल्या**
(आ) पूर्णवाक्येन (2 × 1): (i) कौसल्या कं मातुः विषये पृच्छति? **कौसल्या लवं मातुः विषये पृच्छति।** (ii) लवं दृष्ट्वा जनकस्य मनः कीदृशं भवति? **लवं दृष्ट्वा जनकस्य मनः उत्पथैः पारिप्लवं धावति।** (iii) अश्वं दृष्ट्वा बटवः लवं किं कथयन्ति? **बटवः कथयन्ति यत् 'कुमार! अश्वोऽश्व इति कोऽपि भूतविशेषो जनपदेष्वनुश्रूयते, सोऽयमधुनाऽस्माभिः स्वयं प्रत्यक्षीकृतः'।**
(इ) निर्देशानुसारम् (2 × 1): (i) 'धावति' कर्तृपदम्? **मनः** (ii) 'आम्' विलोमपदम्? **नहि/न** (iii) 'भगवतः' विशेष्यपदम्? **वाल्मीकेः**

CBSE 2024 · 49 Q11 नाट्यांशः: लवः '(प्रविश्य, स्वगतम्) अविज्ञातवयःक्रमौचित्यात्... एष वो लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः।' ... कौसल्या '...जात! पश्यामि ते मुखपुण्डरीकम्।' (पृष्ठ 2–3) [5]

उत्तर: (अ) एकपदेन: (i) शिरसा प्रणामपर्यायः कस्य अस्ति? **लवस्य** (ii) लवम् उत्सङ्गे गृहीत्वा कस्याः मनोरथः पूरितः? **अरुन्धत्याः** (iii) अविज्ञातवयः कः अस्ति? **लवः**

(आ) पूर्णवाक्येन: (i) अरुन्धती लवम् उत्सङ्गे गृहीत्वा किं चिन्तयति? **अरुन्धती चिन्तयति यत् दिष्ट्या न केवलम् उत्सङ्गः चिरात् मनोरथः अपि मे पूरितः।** (ii) लवः पूज्यान् दृष्ट्वा अभिवादनविषये किं चिन्तयति? **लवः चिन्तयति यत् अविज्ञातवयःक्रमौचित्यात् पूज्यान् अपि सतः कथम् अभिवादयिष्ये।** (iii) लवः कीदृशेन स्वरेण रामभद्रम् अनुसरति? **लवः कलहंसघोषघर्घरानुनादिना स्वरेण रामभद्रम् अनुसरति।**

(इ) निर्देशानुसारम्: (i) 'पश्यामि' कर्तृपदम्? **अहम् (कौसल्या)** (ii) 'कमलम्' इत्यर्थे पदम्? **पुण्डरीकम्** (iii) 'मांसलोज्ज्वलेन' विशेष्यपदम्? **देहबन्धेन**

> ★ **परीक्षा-सुझाव: उत्तर-लेखन नियम (अंक-योजना):** एकपदीय में केवल पद; पूर्णवाक्य में प्रश्न के पदों से पूरा वाक्य (कर्ता + क्रिया सहित); समानार्थी पद मान्य; उपयुक्त विभक्ति-वचन न हों तो अंशतः अंक कटते हैं।

CBSE 2025 · 49 Q11 नाट्यांशः: लवः 'दृष्टमवगतं च। नूनमाश्वमेधिकोऽयमश्वः।' बटवः 'कथं ज्ञायते?' लवः 'ननु मूर्खाः!... यदि विप्रत्ययस्तत्पृच्छत।' बटवः 'भो भोः! किंप्रयोजनोऽयमश्वः परिवृतः पर्यटति?' [5]

उत्तर: (अ) एकपदेन: (i) के अश्वं परितः पर्यटन्ति? **रक्षितारः** (ii) अश्वः कीदृशः अस्ति? **आश्वमेधिकः** (iii) 'दृष्टमवगतं च' इति कः वदति? **लवः**

(आ) पूर्णवाक्येन: (i) बटवः रक्षकान् किं पृच्छन्ति? **बटवः पृच्छन्ति 'भो भोः! किंप्रयोजनः अयम् अश्वः परिवृतः पर्यटति?'** (ii) रक्षितारः कीदृशाः सन्ति? **रक्षितारः प्रत्येकं शतसंख्याः कवचिनः दण्डिनः निषङ्गिणः च सन्ति।** (iii) अश्वं दृष्ट्वा लवः किं वदति? **लवः वदति 'दृष्टमवगतं च, नूनम् आश्वमेधिकः अयम् अश्वः'।**

(इ) निर्देशानुसारम्: (i) 'सैनिकाः' पर्यायः? **रक्षितारः** (ii) 'पर्यटति' कर्तृपदम्? **अश्वः** (iii) 'अस्माभिः' विलोमः? **युष्माभिः**

अभ्यासाय अन्यः नाट्यांशः (बोर्ड-शैली)

'लवः: भो भोः! तत्किमक्षत्रिया पृथिवी? यदेवमुद्घोष्यते? (नेपथ्ये) रे, रे, महाराजं प्रति कः क्षत्रियः? लवः: धिग् जाल्मान्...'

उत्तर: (अ) (i) लवः कान् धिक्करोति? **जाल्मान्** (ii) 'महाराजं प्रति कः क्षत्रियः' इति कुत्र उच्यते? **नेपथ्ये** (आ) लवः किं पृच्छति? **लवः पृच्छति 'तत्किम् अक्षत्रिया पृथिवी, यदेवम् उद्घोष्यते?'** (इ) 'भूमिः' पर्यायः? **पृथिवी**; 'उद्घोष्यते' कर्मवाच्ये कर्ता? (घोषणा/वाक्यम्)

CBSE 2024–2026 व्याकरण-प्रश्नाः (इसी पाठ से)

वर्ष	प्रश्न	उत्तर
2026	अयि जात! कथयितव्यं कथय	कथ् + तव्यत्
2026	अस्ति ते माता? स्मरसि ___ तातम्	वा
2025	पठितमेव युष्माभिरपि तत्काण्डम्	युष्माभिः + अपि
2025	अयि जात कथयितव्यम् कथय	कथ् + तव्यत्
2025	तत्किम् अक्षत्रिया पृथिवी?	अक्षत्रिय + टाप्
2025	___ च विप्रत्ययः तत्पृच्छत	यदि
2025	मनो मे संमोहस्थिरमपि...	शिखरिणी
2025	यदि नो सन्ति सन्त्येव...; ...मुखचन्द्रेणापि संवदत्येव	अनुप्रास; रूपक
2024	योऽयमश्वः पताकेयम्	पताका + इयम्
2024	अश्व इति कोऽपि भूतविशेषः	कः + अपि
2024	सुलभसौख्यम् इदानीं बाल + त्व भवति	बालत्वम्
2024	महाराजं ___ कः क्षत्रियः?; जात! ___ जीव	प्रति; चिरम्

2024	...स्वरेण ___ अनुसरति (रामभद्र)	रामभद्रम्
2024	पश्यामि ते मुखम् पुण्डरीकम्	मुखपुण्डरीकम्
2024	अश्वः अधुना अस्माभिः प्रत्यक्षीकृतः	कैः
2024	महिम्नामेतस्मिन्...; पुनरपि शिशुर्भूतो...	शिखरिणी; उत्प्रेक्षा

बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः: 20 MCQs

1. 'उत्तररामचरितम्' नाटकस्य रचयिता?
   (A) भासः (B) कालिदासः (C) भवभूतिः (D) शूद्रकः
2. पाठः कतमात् अङ्कात्?
   (A) चतुर्थात् (B) प्रथमात् (C) सप्तमात् (D) तृतीयात्
3. लवकुशौ कस्य आश्रमे पालितौ?
   (A) वसिष्ठस्य (B) विश्वामित्रस्य (C) अगस्त्यस्य (D) वाल्मीकेः
4. अश्वमेधीय-अश्वस्य रक्षकः राजपुत्रः?
   (A) कुशः (B) चन्द्रकेतुः (C) लक्ष्मणः (D) भरतः
5. 'सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति' इति का वदति?
   (A) अरुन्धती (B) कौसल्या (C) सीता (D) कैकेयी
6. 'कुवलयम्' इत्यस्य अर्थः?
   (A) श्वेतकमलम् (B) पुष्पम् (C) रक्तकमलम् (D) नीलकमलम्
7. जनकस्य मनः कीदृशं लवः हरति?
   (A) संमोहस्थिरम् (B) क्रुद्धम् (C) प्रसन्नम् (D) चञ्चलम्
8. 'अयस्कान्तशकलः' इत्यस्य अर्थः?
   (A) लोहखण्डः (B) स्वर्णखण्डः (C) चुम्बकखण्डः (D) प्रस्तरः
9. लवः कथं प्रणमति?
   (A) न प्रणमति (B) हस्ताभ्याम् (C) पादाभ्याम् (D) शिरसा (प्रणामपर्यायः)
10. 'जात! चिरं जीव' इति का कथयति?
   (A) अरुन्धती (B) कौसल्या (C) सीता (D) बटवः
11. लवः कलहंसघोषघर्घरानुनादिना स्वरेण कम् अनुसरति?
   (A) कुशम् (B) जनकम् (C) रामभद्रम् (D) वाल्मीकिम्
12. 'मुखपुण्डरीकम्' इत्यत्र समासः?
   (A) कर्मधारयः (रूपक) (B) बहुव्रीहिः (C) द्वन्द्वः (D) अव्ययीभावः
13. लवः आत्मानं कस्य इति वदति?
   (A) रामस्य (B) वाल्मीकेः (C) सीतायाः (D) जनकस्य
14. बटवः अश्वं किं मन्यन्ते?
   (A) मृगम् (B) गजम् (C) भूतविशेषम् (D) देवम्
15. अश्वस्य कति खुराः इति बटवः वदन्ति?
   (A) द्वौ (B) अष्टौ (C) षट् (D) चत्वारः
16. 'पश्चात्पुच्छं वहति विपुलम्' इत्यत्र छन्दः?
   (A) मन्दाक्रान्ता (B) शिखरिणी (C) अनुष्टुप् (D) उपजातिः
17. 'सप्तलोकैकवीरस्य दशकण्ठकुलद्विषः' कस्य विशेषणम्?
   (A) रामस्य (B) लवस्य (C) चन्द्रकेतोः (D) रावणस्य
18. 'तत्किम् अक्षत्रिया पृथिवी?' इति कः वदति?
   (A) बटवः (B) पुरुषः (C) जनकः (D) लवः
19. 'रोहितानाम्' इत्यस्य अर्थः?
   (A) अश्वानाम् (B) मृगाणाम् (C) मत्स्यानाम् (D) सैनिकानाम्
20. पाठस्य अन्ते लवः किं करोति?
   (A) पलायते (B) रोदिति (C) धनुः आरोपयति (D) अश्वं ददाति

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: लव ने सबको सामूहिक प्रणाम किया। कारण: उसे पूज्यजनों की आयु का क्रम ज्ञात नहीं था।
2. कथन: लव ने घोड़े को आश्वमेधिक पहचाना। कारण: उसके रक्षक सौ-सौ की संख्या में कवचधारी थे और लव ने अश्वमेधकाण्ड पढ़ा था।
3. कथन: बटुओं ने घोड़े का शास्त्रीय वर्णन किया। कारण: बटु घोड़े को 'भूतविशेष' मानते थे।
4. कथन: लव राजपुरुष की धमकी से डरकर भाग गया। कारण: लव ने धनुष चढ़ा लिया।

SAMPLE · notesbazar.in

5. कथन: जनक का मन लव की ओर खिंचा। कारण: लव में राम-सीता की आकृति, कान्ति, वाणी प्रतिबिम्बित थी।
6. कथन: उत्तररामचरित भवभूति की श्रेष्ठ रचना है। कारण: भवभूति यशोवर्मा के समकालीन थे।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

अन्तिम-रात्रि सारांशः

- भवभूति, उत्तररामचरित अंक 4; पात्र: जनक, कौसल्या, अरुन्धती, लव, बटु, राजपुरुष; रस: वात्सल्य, हास्य, वीर।
- शिष्टानध्याय, सुलभसौख्यं बालत्वम् (बालत्वम्); कुवलयदलस्निग्धश्यामः (हरिणी); महिम्नामेतस्मिन् (शिखरिणी), अयस्कान्तशकलः।
- लव: प्रणामपर्यायः; अरुन्धती: उत्सङ्ग + मनोरथ; कौसल्या: कलहंसस्वर, मुखपुण्डरीकम्, मुखचन्द्र; जनक: पारिप्लवं मनः (शार्दूल); 'स्मरसि वा तातम्', 'कथयितव्यम्', 'वाल्मीकेः'।
- बटु: अश्वोऽश्व भूतविशेषः (मन्दाक्रान्ता वर्णन); लव: आश्वमेधिकोऽयमश्वः, कवचिनः दण्डिनः निषङ्गिणः; योऽयमश्वः पताकेयम् (अनुष्टुप्); अक्षत्रिया पृथिवी; यदि नो सन्ति सन्त्येव; लोष्ठैः, रोहितानाम्; धनुः आरोपयति।
- बोर्ड: 2026, 2025, 2024 तीनों में नाट्यांश इसी पाठ से!

SAMPLE · notesbazar.in